सुभद्रा कुमारी चौहान

डॉ आशा मीणा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग
मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी, बिहार
Email: ashameena@mgcub.ac.in

सुभद्रा कुमारी चौहान

- सामान्य परिचय
- कृतियां
- काव्य की विशेषताएँ
- निष्कर्ष
- संदर्भ

सामान्य परिचय

- सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म 16 अगस्त 1904 को प्रयागराज मे हुआ
- तथा इनकी मृत्यु 15 फरवरी 1948 को सिघनी मे हुई ।
- यह राष्ट्रीय चेतना की एक सजक कवयित्री रही है।
- इन्होंने दो कविता संग्रह तथा तीन कहानी संग्रह लिखे हैं
- लेकिन इनकी प्रसिद्धि का मूल कारण झाँसी की रानी कविता है ।

सम्मान-

- भारतीय तटरक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्र प्रेम की भावना को सम्मानित करने के लिए नियुक्त तटरक्षक जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान का नाम दिया है ।
- भारतीय डाक तर विभाग ने 6 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान मे 25 पैसे का एक टिकिट जारी किया है ।

कृतियां-

1° कहानी संग्रह-

- बिखरे मोती (1932)
- उन्मादिनी (1934)
- सीधे सीधे चित्र (1947)

2° कविता संग्रह

- मुकुल (1930)
- त्रिधारा

3° जीवनी

- मिला तेज से तेज

- सुभद्रा कुमारी चौहान को उनकी कहानियों या हिन्दी साहित्य सम्मेलन का 'सिम्मरिया पुरस्कार' दो बार प्राप्त हुआ था।

सुभद्रा कुमारी चौहान की काव्य की विशेषताएँ-

- भारतेन्दु हरीशचंद ने जिस राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा को जन्म दिया था
- उसमे अपना सक्रिय योगदान देने वाले कवियों मे बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन', राधा चरण गोस्वामी, प्रताप चरण मिश्र, मैथिली शरण गुप्त, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', माखन लाल चतुर्वेदी, सोहन लाल द्विवेदी, श्याम नारायण पाण्डेय, रामधारी सिंह दिनकर , जय शंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, नाथुराम शर्मा प्रमुख हैं |

- इसी राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य धारा मे सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपना विशिष्ट योगदान दिया है
- सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता के प्रमुख प्रतियाय है प्रेम एवं वात्सल्य
- प्रेम के अंतर्गत देश प्रेम लौकिक प्रेम एवं आध्यात्मिक प्रेम को प्रमुखता दी है क्योकि वह भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम समय था।
- इसीलिए उनकी कविता मे समसामयिक विषयो को महत्व मिला है ।
- वात्सल्य के अंतर्गत भक्ति भावना भी दिखाई देती है ।

- डॉ रामकुमार वर्मा ने 'मुकुल' कविता संग्रह की भूमिका मे स्पष्ट बताया है कि-
- "सुभद्रा कुमारी चौहान के काव्य मे विविधता होते हुये भी उनकी कविताएँ राष्ट्रीय है। क्योंकि उनका जीवन ही राष्ट्रीय मानरूप है। सच्चे अनुभवो ने उनकी इन कविताओ को अधिक स्पष्ट और ह्रदयग्राही बना दिया है.....इन्होने अपनी राष्ट्रीय कविताओ मे वीर भाव के काव्य भावुकता भी इस प्रकार भर दी है कि उन कविताओ का मूल्य वस्तुत: देश के मूल्य के बराबर हो जाता जाता है"।

देश प्रेम

- देशप्रेम एवं राष्ट्रियता की भावना से ओतप्रोत जालियावाल बाग, झाँसी की रानी, वीरों का कैसा हो बसंत आदि कविताएँ भारतीय नवयुवको का देश के प्रति प्रेम एवं कर्तव्य के प्रति जागरूक करती है।
- देश प्रेम को उजागर करती हुई 'झाँसी की रानी' कविता की पंक्तिया-

"सिंहासन हिल उठे रजवशो मे भृकुती तानी थी,
बूढ़े भारत मे भी आयी फिर से नयी जवानी थी।"

लौकिक प्रेम

- कवियत्री ने मानव प्रेम के अतिरिक्त ईश्वर प्रेम को भी अपनी कविताओ मे अभिवक्त किया है
- वे कृष्ण को अपना आराध्य मानती है उनकी भक्ति करती हैं-

“मैं हूँ गरीबिनी ऐसी,
जो कुछ साथ नहीं लायी,
फिर भी साहस कर मंदिर में, पूजा को आयी।”

वात्सल्य प्रेम :

- कवियत्री की ‘मुकुल’ काव्य संग्रह मे प्रेमगीत, राष्ट्रभक्ति गीत के साथ साथ वात्सल्य गीत मुख्यत: उनकी बेरी या केंद्रित है
- उन गीतों मे मातृ सुलभ स्नेह वात्सल्य भी सुंदर झांकी अभिभूत कर देती है ।
- कवयित्री अपनी बेरी मे अपने बचपन की अलक देखती है

“तुम कहते हो मुझको इसका रोना नहीं सुहाता है,
मैं कहती हूँ इस रोने से, अनुभव सुख छा जाता है,
सच कहती हूँ, इस रोने की, छवि को जरा निहारोगे,
बड़ी बड़ी आँसू की बूंदों पर, मुक्ताव ली वारोगे।”

प्रकृति प्रेम :

- कवयित्री को प्रकृति से अति विशेष प्रेम था।
- उनके प्रकृति प्रेम की अलक उनकी कविताओ मे दिखाई देती है ।
- वे प्रकृति को मानव से भिन्न नहीं समझती थी, इसीलिए उन्होंने अपनी कविताओ में प्रकृति को भी स्थान दिया है :

“यह मुरछाया हुआ फूल है, इसका हृदय दुखाना मत।
स्वंय बिखरने वाली इसकी, पंखुड़ियाँ बिखरना मत।
गुजरो अगर पास मे इसके, इसे चोट पहुँचाना मत।
जीवन की अंतिम घड़ियों मे, इसे रुलाना मत।
अगर हो सके तो ठंडी, बूंदे टपका देना प्यारे।
जल न जाए संतप्त हृदय शीतलता ला देना प्यारे।”

देश के वीरों के प्रति श्रद्धांजलि का भाव :

- कवयित्री जलियाँवाला बाग और वीरों का कैसा हो बसंत मे वीर सैनिको के प्रति अपनी श्रद्धा वक्त करती हैं-

“यहाँ कोकिला नहीं, काक है शोर मचाते।
काले काले वीर, भ्रमर का भ्रम उपजाते।”

प्रियतम के प्रति प्रेम का भाव :

- कवयित्री अपनी कविताओं के माध्यम से यह संदेश देती है कि मनुष्य जब तक जीवित रहता है तब वह किसी से प्रेम स्नेह को तरसता है।
- इसी प्रकार वह अपनी प्रियतम से स्नेह करती है।
- और दूसरी तरफ व्यतीत हृदय से भी उसके नजदीक पहुँचने का प्रयास करती है।
- प्रियतम के प्रति प्रेम और स्नेह उनकी कविताओं में दिखाई देता हैं-

“ कठिन है मार्ग, मुझको मंजिलें वे पार करती है,
उमंगों की तरंगें बढ़ पड़े, शायद फिसल जाओ,
तुम्हें कुछ चोट आ जाये, कहीं लाचार लौटूँ मैं,
हठीले प्यार से व्रत-भंग, की घड़ियाँ निकट लाओ।”

देवों के प्रति श्रद्धा भाव –

- कवयित्री ने अपनी कविताओं के माध्यम से हिन्दू धर्मों के आराध्य देवी–देवताओं की पूजा अर्चना, उनके प्रति श्रद्धा, प्रेम,भक्ति भाव प्रकट किये है।
- उनके मन में मंदिर, मस्जिद के प्रति अपार श्रद्धा है–

“मेरा मदिर, मेरी मस्जिद ,काबा-काशी यह मेरी
पूजा-पाठ ,ध्यान–जप–तप है, घट-घट वासी यह मेरी
कृष्ण चंद्र की क्रीड़ाओं को अपने आँगन में देखों
कौशल्या के मातृ भेद को, अपने ही मन में देखों।”

भ्राता (भाई) के प्रेम –

- कवयित्री को रक्षा बंधन का त्यौहार बहुत पसंद है।
- भाई-बहन के पवित्र प्रेम व विश्वास के प्रति उनकी गहरी आस्था है।
- वे अपने देश वीर सैनिकों को राखी भेजते हुए यह कामना करती है कि देश कि सीमा पर रहते हुए अपनी बहनों का सम्मान करें-

“मैंने पढ़ा, शत्रुओं को भी, जब–जब राखी भिजवाई,
रक्षा करने दौड़ पड़े वे राखी बंद शत्रु भाई।”

कांग्रेस दल के प्रति प्रेम-

- कवयित्री ने अपनी कविताओं में कांग्रेस दल के प्रति अपना प्रेम अभिव्यक्त किया है-

“है स्वागत को स्फूर्ति तदपि ,
माँ मन में होता है कुछ सोच।
आनंद में घबराहट-सी है,
है उत्साह और संकोच।”

स्वदेश प्रेम –

- कवयित्री ने अपनी कविताओं में अपने देश ,अपनी मातृभूमि के प्रति अपार प्रेम को अभिव्यक्त किया है-

"आ, उस सेवक के समान तू,
“विनयशील अनुगामी-सा,
अथवा आ तू युद्ध क्षेत्र में,
कीर्ति-ध्वजा का स्वामी-सा।"

निष्कर्ष –

- सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य के माध्यम से अपने राष्ट्र प्रेम कि अभिव्यक्ति प्रमुखता से की है।
- अपनी कविताओं के माध्यम से माध्यम से उन्होने राष्ट्र प्रेम की भावना देश के नवयुवकों में जगाने का प्रयास किया है।
- राष्ट्रीय आंदोलन में उन्होने अपनी सक्रिय भूमिका निभायी।
- इससे इनका स्थान राष्ट्रीय काव्यधारा की प्रमुख कवयित्री के रूप में माना जाता है ।

संदर्भ –

- विकिपीडिया
- 'मुकुल तथा अन्य कवितायें 'काव्य संग्रह सुभद्रा कुमारी चौहान, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद ।
- हिन्दी साहित्य: युग और प्रवृत्तियां, डॉ शिव कुमार शर्मा, अशोक प्रकाशन, दिल्ली ।

धन्यवाद